सम्पादकीय

विश्व गुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोध पत्रिका का चतुर्थ पुष्प आपके कर कमलों में देते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस मासिक पत्रिका के तीन अंक पूर्व में प्रकाशित हो चुके हैं। भारतीय धर्म संस्कृति के शोध लेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। नियमित विद्वानों द्वारा भेजे जा रहे शोध लेख हमारा मनोबल बढा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं व शोध संस्थान द्वारा किये गये कार्यक्रमों के चित्र सहित विवरण प्रकाशित किया गया है।

इस चतुर्थ अंक में 'वेद छन्द' पर शिवनारायण जी का लेख, वेद में छन्द शास्त्र का महत्त्व बता रहा है। साथ ही आदिकवि वाल्मिकी की प्रशंसा में स्वरचित पद्य नारायण शास्त्री कांकर द्वारा पत्रिका को मनोहरणीय बना रहा है। योग शास्त्र पर आङ्ग्ल भाषिक निबन्ध व डॉ. सुरेन्द्र शर्मा का 'राष्ट्र प्रेम' पत्रिका के लिए गौरव का विषय है। यहाँ छात्रों से भी अपनी लेखनी को पूर्ण मनोयोग से समाहित किया है। आप सब का उत्साह ही हमारे निरन्तर प्रकाशन को सार्थक बना रहा है।

आप सभी को शुभकामना व आगामी लेखों के लिए आग्रह के साथ।

–सम्पादक